

शिल्प तो रचना की अपनी विशिष्टता है—सत्यनारायण

वार्ताकार— अवनीश सिंह चौहान

अवनीश: अपने बचपन के बारे में बताएं?

सत्यनारायण: मेरा जन्म (वर्ष 1934), भोजपुर (तब का शाहाबाद जिला, बिहार) के एक गांव में हुआ। गांव सोन नदी से निकली नहर पर था। खेतों में झूमती-लहराती फसलों के बीच मटरगस्ती बड़ी भली लगती। नहर में नहाने-तैरने का अलग मजा था। नहर आरा मुख्यालय से जोड़ती थी। आवागमन के दो साधन थे। आरा सासाराम के बीच छोटी रेल चलती थी। नजदीक के स्टेशन से गांव लगभग चार कोस था। इसे हम बैलगाड़ी से तय करते। दूसरा साधन नहर में चलने वाला स्टीमर था। इसे हम बोट कहते थे। गांव आने जाने में दस-ग्यारह घण्टे लग जाते। हम अक्सर बोट से ही आते-जाते। जल का स्तर नियंत्रित करने के लिए हर कोस-डेढ़-कोस पर 'लॉक' थे। इसे हम 'लख' कहते थे। दोनों ओर बड़े फाटक। बोट के लख में घुसते ही पीछे का फाटक बन्द कर दिया जाता। आगे के फाटक से धीरे-धीरे पानी छोड़ा जाता था। जब पानी का स्तर लेबल पर आ जाता तो आगे का फाटक खोल दिया जाता और बोट चल पड़ता। बन्द लख के बीच बढ़ते-उतरते जल स्तर के साथ बोट का ऊपर-नीचे होना मुझे विस्मयकारी रोमांच और अबूझ भय से भर देता। आज सोचता हूँ, कि मेरे नवगीत-संकलन 'टूटते जल बिम्ब' में जल से जुड़े मेरे अनेक गीत शायद इसी स्मृति से उपजे हैं। फिर, अपने गांव के वह धनीराम मास्टर की पाठशाला। गोबर लीपी जमीन पर बोरियां बिछाकर हम बैठते-स्लेट-पेंसिल और 'मनोहर पोथी' के साथ। सामने गज भर की खजूर की छड़ी के साथ डेढ़ हाथ ऊँची, चौकोर चौकी पर मास्टर जी विराजते। धनीराम जी बातों से कम, छड़ी से ज्यादा काम लेते। प्रार्थना में कुछ छूट गया तो छड़ी, पाठ में चूक हुई तो छड़ी, जोड़-घटाव गलत हुआ तो छड़ी। मतलब मास्टर जी को हमारी असावधानी बर्दाश्त नहीं थी। तो रचना के क्षणों में सावधान रहने का कदाचित पहला गुरुमंत्र था यह मेरे लिए।

अवनीश: बचपन और युवावस्था की अनुभूतियां जो आपके मन में खदबदायीं और आपने गाना-गुनगुनाना शुरू कर दिया?

सत्यनारायण: सन् 1942 में, मैं पटना आ गया और बिहार के प्रमुखतम विद्यालय पटना कालीजियट में दाखिला लिया। उसी वर्ष काव्य-पाठ प्रतियोगिता में शामिल होने का सुयोग मिला। मैंने 'जयद्रथ वध' की कुछ पंक्तियों का (स्मरण से) पाठ किया और पुरस्कृत हुआ। हमारे हिन्दी शिक्षक थे (स्व0) डॉ. रामखेलावन पाण्डेय। एम. ए. में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद उन्होंने विश्वविद्यालय ज्वाइन किया और रांची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए। यहां यह भी बता दूँ कि पाण्डेय जी ने स्कूल शिक्षक रहते हुए प्राइवेट छात्र के रूप में आई.ए.बी.ए. और एम.ए. किया। यह वही रामखेलावन पाण्डेय हैं जिन्होंने हिन्दी में गीति साहित्य की पहली प्रामाणिक और महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। उनका स्नेहाशीष मुझे निरन्तर मिलता रहा। उन्होंने मेरे प्रथम काव्य-संकलन 'तुम ना नहीं कर सकते' की भूमिका लिखी। पाण्डेय जी के जाने के बाद गीत के सुकंठ और सुपरिचित कवि

रामगोपाल 'रुद्र' हमारे शिक्षक हुए। उनकी प्रेरणा से मैं तुकबन्दी करने लगा और वे बड़े स्नेह से रचनाएं सुधारते-सलाह देते थे। गीत के व्याकरण का प्रथम पाठ मैंने उन्हीं से सीखा। यह दौर स्वतंत्रता संग्राम का निर्णायक दौर (1942-46) भी था। आजादी के तराने हमारे होठों पर होते थे। कालेज के दिनों में आकस्मिक रूप से बच्चन जी को सुनने का सुयोग मिला था। वे हमारे प्राध्यापक से मिलने कॉलेज आए थे। हम लोगों ने उन्हें घेरा और कविता सुनाने की जिद की। क्लास रूम में ही बच्चन जी ने अपने दो गीत सुनाए थे- 'प्रिय, शेष बहुत है रात अभी मत जाओ' तथा 'कौन हंसिनिया लुभाए हैं तुझे, जो मानसर भूला हुआ है।

अवनीश: एक समर्थ रचनाकार के रूप में आपकी पहचान कब और कैसे बनी?

सत्यनारायण: वर्ष 1963-65 के बीच छोटी पत्रिकाओं के अतिरिक्त 'लहर' और 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में मेरी कविताएं और गीत समय-समय पर आते रहे। वह साठोत्तरी लेखन का दौर था। इनमें कई रचनाओं की नोटिस ली गई। लघु और बड़ी पत्रिकाओं में प्रकाशित मेरी काव्य-रचनाएं (इस जनतंत्र में 'आदमखोर', 'शहंशाह सुनो' आदि) पढ़कर टाइम्स ऑफ इण्डिया (पटना) के तत्कालीन ब्यूरो चीफ पत्रकार-साहित्यकार (स्व0) जितेन्द्र सिंह ने 'पोयट ऑफ प्रोटेस्ट' शीर्षक से एक लम्बा आलेख लिखा था। उमाकान्त मालवीय ने मेरे नवगीतों की नोटिस ली। 'वासन्ती' की संगोष्ठी में उन्होंने मेरे एक नवगीत- "अब नहीं मिलता कहीं भी लहर का संकेत"-की विशद विवेचना प्रस्तुत की थी। काम आगे बढ़ा और मैं लिखता रहा। ठाकुर प्रसाद सिंह, वीरेन्द्र मिश्र, शम्भुनाथ सिंह, रमानाथ अवस्थी का स्नेह सानिध्य अनायास मिलता रहा।

अवनीश: आपकी रचनाओं में अपनी माटी से जुड़ाव तथा अपने समय की विदूषताओं, अन्तर्विरोधों, आकांक्षाओं और कुंठाओं के अक्स प्रतिबिम्बित होते हैं। उनमें जनता की गहरी मनोव्यथा एवं छटपटाहट का कोरस सुनाई पड़ता है। यह कला कहां से आई?

सत्यनारायण: देखिए, यह कोई कला नहीं है। दरअसल, यह निरन्तर क्रूर और हिंसक होता हुआ हमारा समय है। आज भूख और बीमारी से हुई मौत पर सन्देह होता है कि कहीं यह हत्या तो नहीं है। चीन से मिली शर्मनाक हार (1962) के बाद भारतीय जनमानस का पूरी तरह मोहभंग हो गया। तब राजनीति के फलक पर राममनोहर लोहिया सर्वाधिक प्रासंगिक होकर उभरे। उनकी सोच और भाषा ने साठोत्तरी लेखन को भी प्रभावित किया। हालात बद से बदतर होते रहे। कुछ ही अन्तराल के बाद बिहार आन्दोलन (1974) घटित हुआ। इसे जे.पी.मूवमेन्ट भी कहा गया। जन उभार के अजीब दिन थे वे। हम कवि, -कलाकार फणीश्वरनाथ रेणु की अगुआई में सड़कों-चौराहों पर उतर आए। यह कविता की सर्वथा नई, अनूठी भूमिका थी-जनता की बोली-बानी में जनता से सीधा संवाद। "जुलम का चक्कर और तबाही कितने दिन?/सच कहने की मनाही कितने दिन?/यह गोली, बन्दूक, सिपाही कितने दिन?" जैसी मेरी गीत-पंक्तियां नुक्कड़-चौराहों, जुलूसों, सभाओं और जेल की दीवारों के भीतर गूंजने लगी थीं। यह आकस्मिक नहीं है कि मेरे इस तेवर के गीतों का स्वतंत्र संकलन 'प्रजा का कोरस' शीर्षक से शीघ्र आने वाला है।

अवनीश: नई कविता और गीत के बीच वह कौन-सी विभाजक रेखा है जो उनके बिम्ब विधानों, प्रतीकों और उपमानों का विशिष्ट स्वरूप निर्धारित करती हैं और उनकी अलग विधाओं के रूप में पहचान बनाती हैं?

सत्यनारायण: मुझे समझ में नहीं आता कि विभाजक रेखा की बात बार-बार क्यों की जा रही है। पचास के दशक में नई

कवितावादियों ने गीत की अस्मिता पर सवाल खड़े किये तो हम गीत के कवियों ने नई-कविता पर प्रहार किया। नतीजा यह निकला कि कविता वाले 'कवि' और गीत वाले 'गीतकार' हो गए। देश के विभाजन के बाद साहित्य में यह विस्मयकारी बंटवारा हुआ। हम गीतधर्मी आल्हादित हैं कि हमें हमारी 'टेरीटरी' मिल गई। क्या गीत कविता नहीं है? कोई मुझे बताए कि गीत के शिखर निराला ही क्यों? नरेन्द्र शर्मा, अंचल, नेपाली, जानकीवल्लभ, आर सी बाबू को गीतकार कहकर सम्बोधित किया गया क्या? क्या समकालीन गीत और कविता की अन्तर्वस्तु में कन्टेन्ट में कोई बुनियादी अन्तर है? फार्म (छन्द और छन्दमुक्त) को छोड़कर इनके बिम्ब, प्रतीक अलग-अलग नहीं होते। शिल्प तो रचना की अपनी विशिष्टता है। रचना कथ्य के अनुरूप अपना शिल्प गढ़ती है।

अवनीश: आज के कठिन समय में कविता-गीत (रचना) एवं पाठक/श्रोता के बीच सेतु के रूप में बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानिक तन्तुओं का प्रयोग हो रहा है। ऐसे में गीत-कविता की स्वतःस्फूर्त प्रक्रिया कहां तक प्रभावित होगी?

सत्यनारायण: हां, आज का समय कठिन से कठिनतर होता जा रहा है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर कई तरह के बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक दबाव हमें अपनी चपेट में ले रहे हैं। सामाजिक संरचना, आर्थिक परिदृश्य, राजनीतिक उथल-पुथल सब संकमण के दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे में रचना की स्वतःस्फूर्त प्रक्रिया मायने नहीं रखती। आज का रचनाकार सबकुछ खुली आंखों से देख रहा है और रचना के स्तर पर उसकी चुनौतियों को पूरी चेतना से झेल रहा है। गीत का कवि अपनी रागदीप्त संवेदना के साथ सार्थक हस्तक्षेप कर रहा है। नईम की पंक्तियां हैं—“दिन जो दीनइलाही होते/तब भी सघन तबाही होते/आलमगीर जेठ शासक है/समझदार मरते दारा से”। क्या इन पंक्तियों का अन्तरंग इस कठिन होते समय में पाठक या श्रोता को संवेदित नहीं करता?

अवनीश: आज के साहित्य में मानवीय आयामों को किस तरह से परिभाषित किया जा रहा है और यह अतीत से कितना भिन्न है?

सत्यनारायण: आज के साहित्य में मानवीय आयाम (मानवीय सम्बन्ध) अलग-अलग सन्दर्भों में परिभाषित हो रहे हैं। दलित विमर्श, स्त्री विमर्श साहित्यकार की चिन्ताओं में प्रमुखता से शामिल हैं। भूमण्डलीकरण, ग्लोबल मार्केट, विश्व ग्राम के स्वर साहित्य में दिखाई पड़ रहे हैं। यह सब इस तरह पहले नहीं था।

अवनीश: आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग बढ़ रहा है। कई पत्रिकाएं इंटरनेट पर अपनी पहचान बना रहीं हैं। कई साहित्यकारों ने अपने ब्लॉग खोल रखे हैं। प्रिंट मीडिया को इससे क्या-क्या चुनौतियां होंगी?

सत्यनारायण: इसको लेकर मैं कतई चिन्तित नहीं हूँ। यह एक फेज है। क्या समाचार पत्रों के बाजार में मंदी आई? पत्र-पत्रिकाओं और साहित्य का प्रकाशन हो ही रहा है। पाठक वर्ग बना हुआ है। सो प्रिंट मीडिया की जरूरत है, और बनी रहेगी।

अवनीश: क्या आपको युवा गीतकारों में कोई विशिष्ट चिंतन दिखाई पड़ता है? उनमें कितनी सम्भावनाएं हैं?

सत्यनारायण: मेरी चिन्ता वस्तुतः यह है कि आज हिन्दी में गजलों की बाढ़ आई हुई है। युवा मानस ही क्यों, अनेक बुजुर्ग—गीत कवि भी गजलों को लोकप्रियता का शॉर्टकट मानकर अपना पाला बदल चुके हैं। फिर भी ऐसे ढेर सारे युवा कवि हैं जो पूरी निष्ठा से गीत लिख रहे हैं। उनका गीत—विवेक, उनकी गीत—भाषा बहुत आश्वस्त करती है।

अवनीश: नई पीढ़ी के लिए आपका संदेश।

सत्यनारायण: संदेश क्या दूँ। मेरी वक़्त भी नहीं। बकौल केदारनाथ अग्रवाल नई पीढ़ी से इतना ही कह सकता हूँ—“टूटें न तार कभी जीवन सितार के/ऐसे बजाओ इन्हें प्रतिभा के ताल से/किरणों के कुमकुम से, सेनुर, गुलाल से/लज्जित हो युग का अंधेरा निहार के”।

संपर्क—

सत्यनारायण

डी ब्लाक, बी पी सिन्हा पथ

कदमकुआं, पटना (बिहार)—800003

मो.—09334310250

संपर्क—

अवनीश सिंह चौहान

ग्रा. व पो.—चन्दपुरा (निहाल सिंह)

जिला—इटावा (उ०प्र०)—206127

मो.—09456011560